नवभारत इंदौर, बुधवार, 11 मार्च, 2026

नर सेवा नारायण सेवा के लिए भीमावद का हुआ अरुणोदय

कर्मशील, प्रयोगधर्मिता, करुणा, सहजता, सरलता, संवेदनशील के अद्भुत स्वाभाविक गुणों को बड़ी विनम्रता से सहेजने वाले शाजापुर विधानसभा के विधायक अरुण भीमावद ने अपनी जीत का वो इतिहास रचा है, जिसे लोग लंबे समय तक याद रखेंगे. शाजापुर विधानसभा सीट से तीन बार लगातार टिकट देकर भाजपा ने विश्वास जताया और पार्टी की उम्मीदों पर दो बार खरे उतरे. जिले की राजनीति में नए आयाम लिखने वाले अरुण भीमावद ने विद्यार्थी परिषद की पाठशाला से राजनीति की शुरुआत की थी. राजनीतिक सूचिता के प्रतिबद्ध और जनसेवा को जीवन का लक्ष्य बनाकर सूचिता की राजनीति कर सुशासन की ओर सक्रिय रहना इनका प्रमुख लक्ष्य रहा है. जनहित में नित नए प्रयोग कर जनता की समस्या और उनके निराकरण के लिए प्रशासन की जवाबदेही तय करते हैं. अरुण भीमावद को राजनीति विरासत में मिली है क्योंकि शाजापुर जिले में 20 साल से छात्र राजनीति, फिर युवा मोर्चा की राजनीति के बाद भाजपा की राजनीति में सक्रिय रहे अरुण भीमावद ने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा. संगठन ने जो जिम्मेदारी दी, उसमें वे 24 कैरेट बनकर निकले. शाजापुर जिले में उनके युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष के कार्यकाल में निकाली हल्ला बोल रैली का रिकॉर्ड आज तक न तो कांग्रेस तोड़ पाई और न ही उनकी पार्टी भाजपा. हल्ला बोल रैली से ही शाजापुर जिले में अरुण भीमावद ने राजनीति का नया आगाज करते हुए हल्ला बोल दिया था. और यही कारण है कि सबसे कम उम्र में उन्हें भाजपा संगठन का शाजापुर जिले में मुखिया बनाया गया था. भाजपा के मुखिया होने के नाते जिले के पांचों विधायकों को एकसाथ लेकर संतुलन के साथ संगठन में मजबूत किया. साथ ही हर चुनाव में भाजपा को विजय दिलाई. कार्यकर्ताओं को पूरे साल सक्रिय कर संगठन को मजबूती दिलाकर जन-जन तक पहुंचाया और यही कारण है कि तमाम विषम परिस्थितियों के बावजूद भी प्रतिद्वंद्वियों के अवरोध के बाद उन्हें दोबारा भाजपा जिलाध्यक्ष की कमान मिली. वर्ष 2008 में विधानसभा का टिकट फाईनल होने के बावजूद भी ऐन मौके पर कट गया, लेकिन उन्होंने बिना किसी राग-द्वेष के बिना मलाल के भाजपा प्रत्याशी के लिए सक्रियता से काम किया और उनकी सक्रियता को देखते हुए उन्हें संगठन ने 2013 में शाजापुर विधानसभा जो भाजपा के लिए 25 साल से चुनौती बनी हुई थी से लड़ने का मौका दिया. भाजपा संगठन की नजर में भी शाजापुर विधानसभा भाजपा के लिए हारी हुई सीट रही है, लेकिन आम जनता में लोकप्रिय रहे अरुण भीमावद ने अपने जनसंपर्क और सरल छबि व सहज स्वभाव के चलते भाजपा का वह मिथक तोड़ा, जो इस सीट पर अपनी जीत नहीं मानते थे. और कांग्रेस का वो घमंड तोड़ा, जो कभी अपनी हार स्वीकार नहीं करते थे. यही कारण है कि 2013 में शाजापुर की राजनीति में भीमावद का अरुणोदय हुआ. अभी तक विधायक शाजापुर को ऐसे मिले, कि उनसे मिलने के लिए उनके द्वार जाना पड़ता था, लेकिन अरुण भीमावद ने विधायक बनने के बाद यह भ्रम तोड़ा वे कभी भी किसी मतदाता के घर बिना बताए अचानक पहुंच जाते हैं. यहां तक की शहर में भी वे बिना वीआईपी कल्चर के एक सहज आम आदमी की तरह कभी मोटर साइकिल पर तो कभी पैदल, कभी पान की दुकान पर, तो कभी चाय की दुकान पर, कभी नुक्कड़ पर, तो कभी चौराहे पर आम मतदाताओं के बीच देखे जा सकते हैं.

पार्टी ने लगातार जताया अरूण भीमावद पर भरोसा

भारतीय जनता पार्टी ने बीते दो दशकों से लगातार अरुण भीमावद की राजनीतिक क्षमताओं को देखते हुए संगठन की कमान दो बार सौंपी . तो लगातार तीन विधानसभा चुनाव में भाजपा ने अरुण भीमावद को टिकट देकर भरोसा जताया . 2018 में भाजपा की आपसी बगावत के कारण अरुण भीमावद चुनाव हार गए थे और उनके विरोधियों, प्रतिद्वंद्वियों ने उन्हें राजनीतिक में अस्त मान लिया था, लेकिन उनकी क्षमताओं का आंकलन पार्टी ने किया और 2023 के चुनाव में उन्हें तीसरी बार टिकट देकर उनका राजनीतिक उदय किया . इस बार भी उन्होंने पार्टी के भरोसे और वरिष्ठों की उम्मीदों पर खरा उतरकर शाजापुर विधानसभा जो पूरे प्रदेश में भाजपा की 200 सीट में भी जीती हुई नहीं मानी जाती है, याने पूरे प्रदेश में यदि भाजपा 200 सीट भी जीते, तो शाजापुर विधानसभा भाजपा की नजर में हारी हुई ही मानी जाती है, लेकिन अरुण भीमावद ने 2013 और 2023 में साबित कर दिया कि शाजापुर विधानसभा में भाजपा का उदय अरुण के साथ ही संभव है . यही कारण है कि दोनों बार कांग्रेस से हुकुमसिंह कराड़ा को पटखनी देने वाले अरुण भीमावद ही भाजपा के योद्धा साबित हुए .

सनातन को मजबूती और क्षेत्र के विकास की ललक ...

अक्सर राजनीति में जनप्रतिनिधि अपनी झांकी मंडप और वीआईपी कल्चर में डूबे रहते हैं, लेकिन शाजापुर विधायक अरुण भीमावद शाजापुर के विकास के लिए अपने प्रोटोकॉल को तोड़कर बड़े से बड़े अधिकारी और छोटे-छोटे कर्मचारियों से भी मिलने में झिझकते नहीं है. जो शाजापुर के विकास की बात करता है वे उसके लिए कांधे से कांधा मिलाकर काम करते हैं. शाजापुर के मां राजराजेश्वरी मंदिर, श्रीराम मंदिर, भूतेश्वर महादेव सहित एक दर्जन से अधिक मंदिरों में विधायक बनते ही विकास कार्य के लिए करोड़ों की राशि दिलाई. यहां तक कि जब वे विधायक नहीं थे, तब भी उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह से मां राजराजेश्वरी मंदिर के सौंदर्यीकरण और जीर्णोद्धार के लिए करोड़ों की घोषणा कराई. सनातन धर्म को मजबूत करने और क्षेत्र के विकास की ललक लेकर अरुण भीमावद ने 2023 के विधानसभा चुनाव जीतने के तीन महीने बाद ही करोड़ों के काम स्वीकृत कराए.

यहां तक कि भारत संकल्प यात्रा में मोहन बड़ोदिया में आईटीआई कॉलेज खुलवाने की स्वीकृति तत्काल दिलाई. दूसरी पारी के विधायक कार्यकाल में लगभग 10 करोड़ से अधिक के कार्यों की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है. बीते तीन महीनों में 100 से अधिक लोगों को इलाज हेतु सहायता पहुंचाई.

जनता की सेवा ही मेरा संकल्प, यही हैं विकास का प्रकल्प

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि नर सेवा नारायण सेवा का नारा जन-जन तक पहुंचना चाहिए. इसी को सार्थक करने में लगे हैं विधायक अरुण भीमावद. 2013 में विधायक बनने के बाद उन्होंने लोगों को बीमारी में जो आर्थिक सहायता और मदद की, उसी का परिणाम है कि वे क्षेत्र में नर सेवा के लिए जाने गए. 2018 का चुनाव हारने के बाद भी वे राजनीति से दूर नहीं रहे और ना ही हार से दुखी होकर घर बैठे. वे उसी गति और सक्रियता से लोगों की सेवा में लगे रहे. जिस प्रकार वे विधायक थे. कोरोना काल में उन्होंने लोगों की आर्थिक मदद के साथ-साथ शासन-प्रशासन से उचित इलाज के लिए अपनी जान की परवाह किए बिना हर संसाधन मुहैया कराने में जुटे रहे.

शाजापुर जिले में सबसे ज्यादा बीमार लोगों को आर्थिक सहायता देने में विधायक अरुण भीमावद अव्वल हैं. किसी भी आम आदमी ने यदि इलाज के लिए कागज दिया, तो विधायक सब काम छोड़कर सबसे पहले बीमार आदमी के इलाज के लिए शासन से आर्थिक सहायता दिलाने के लिए ऐसे सक्रिय रहते, मानो उनके घर का कोई व्यक्ति हो.

परिवार पर राजनीति का ग्लैमर नहीं होने दिया हावी

बीते 20 साल से सत्ता में रहने के बाद भी अरुण भीमावद ने कभी भी सत्ता का गुरुर और विधायक का रुतबा परिवार पर हावी नहीं होने दिया. राजनीति का ग्लैमर उनके परिवार पर कभी झलकता नहीं है. यही कारण है कि बड़ी बेटी प्रशासनिक अधिकारी, परिवार में एक डॉक्टर, इंजीनियर और एड्वोकेट जैसे उच्च शिक्षित सदस्य शामिल हैं. परिवार को राजनीति से अलग रखा और सूचिता की राजनीति को आगे बढ़ाने में अरुण भीमावद ने हर संभव प्रयास किए. यही कारण है कि उनकी कार्य क्षमता और राजनीति में उनकी सक्रियता को देखते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री उमा भारती के साथ सीएम हाउस में काम करने का मौका मिला. जिले में दो बार भाजपा जिलाध्यक्ष बनने का अवसर मिला और पार्टी ने लगातार तीन बार टिकट देकर उन्हें राजनीति के अवसर पर प्रदान किए, जिसमें से दो बार वे विधायक का चुनाव जीते. संभवत: शाजापुर विधानसभा से अरुण भीमावद भाजपा से इकलौते ऐसे राजनेता होंगे, जिन्हें भारतीय जनता पार्टी ने लगातार तीन बार टिकट दिया.

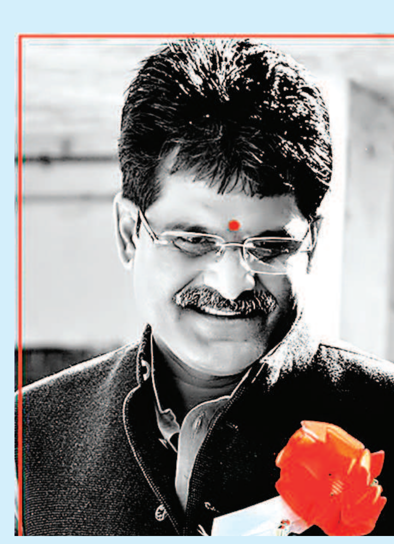

विधायक अरुण भीमावद एक परिचय...

नाम : श्री अरुण भीमावद
पिता का नाम : श्री देवीसिंह भीमावद
माता का नाम : श्रीमती सांईकुंवर भीमावद
जन्म : 11 मार्च 1969
शिक्षा : बीकॉम

स्वत्वाधिकारी रामगोपाल इन्वेस्टमेंट प्रा. लि. हेतु लेसी एंगेज मीडिया प्रा.लि. के लिए आशुतोष उपाध्याय द्वारा 6/54, फिरोज गांधी प्रेस काम्प्लेक्स, इंदौर से प्रकाशित एवं नवभारत प्रेस भोपाल प्रा.लि. , फिरोज गांधी प्रेस कॉम्प्लेक्स इंदौर से मुद्रित. समूह संपादक क्रांति चतुर्वेदी*, *समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत जिम्मेदार, फोन/फैक्स- 4096718 RNI Reg. No.7590/60